संताल जनजाति की सृष्टि कथा

डी. राजकिशोर हॉसदा
एम. ए. पी.एचडी.
राष्ट्रीय सह-संयोजक
जनजाति सुरक्षा मंत्र दुमका, झारखंड

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली - 110055

संताल जनजाति की सृष्टि कथा

डी. राजकिशोर हॉसदा

प्रकाशक

सुरुचि प्रकाशन
(सुरुचि संस्थान न्यास)
केशव कुंज, झण्डेवाला,
नई दिल्ली - 110055
011-23514672, 8851358634
suruchiprakashan@gmail.com
www.suruchiprakashan.com

© सुरुचि प्रकाशन

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 2024
मूल्य : ₹ 000
आवरण एवं
पृष्ठ संयोजक : अमित कुमार
मुद्रक :
ISBN :

संताल जनजाति की सृष्टि कथा

संताल जनजाति अपने देश में जनसंख्या की दृष्टिकोण से जनजातियों में तीसरा और भाषा की दृष्टिकोण से प्रथम स्थान पर है। इनकी जनसंख्या देश में लगभग एक करोड़ है। ये विशेषकर बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असम आदि राज्यों में निवास करते है। अपने देश के अलावे नेपाल, बंगलादेश और मॉरिसश में रहते हैं। संतालों के विश्वास और कथा के अनुसार प्रारंभ में केवल जल ही जल था, कहीं पर भी मिट्टी नहीं थी। इसका मतलब नीचे समुद्र और ऊपर आसमान था। स्वर्ग में केवल माराङ ठाकुर जीव (परमपिता परमेश्वर) और ठाकुरान गोगो (परमेश्वरी) ही थे। आगे चलकर अनेक देवी-देवताओं की दृष्टि माराङ ठाकुर जीव ने किया। वे दोनों स्वर्गपुरी से जलापुरी (समुद्र) में नियमित रूप से तोड़ेसुताम (बहुत ही महीनसुत) का सीढ़ी के माध्यम से उतरते और चढ़ते थे। एक बार ठाकुरान गोगो (परमेश्वरी) अकेले ही उतरी, तो वे देर तक स्नान करने लगी। स्नान करते-करते शरीर से बहुत मैल निकला, विशेषकर गर्दन और गले के पास से, उसको संताली में हाँस-जाङ कहते हैं। ठाकुरान गोगो (परमेश्वरी) उस मैल को जमा करती गई और क्या मन में आया कि उससे दो पक्षी को बनायी जाय। जब बहुत देर हो गई तो ठाकुर जीव (परमेश्वर) को चिंता होने लगी कि अभी तक ठाकुरान गोगो (परमेश्वरी) नहीं आ रही है, तब वे भी जलापुरी (समुद्र) में तोड़ेसुताम के माध्यम से उतरे, तब वो पूछते हैं अभी तक तुम यहीं पर हो। इसके बाद ठाकुरान गोगो (परमेश्वरी) बताती है कि आज पता नहीं मेरे मन में ऐसा विचार क्यों आया कि मैं अपने शरीर के मैल से दो पक्षी को बनायी। यदि आप इन दोनों में प्राण दे देंगे। तो माराङ ठाकुर तुरन्त तैयार नहीं हुए। आप मेरी बात को नहीं माने तो मैं यहीं पर रहूँगी। फिर क्या था थोड़ी देर

के बाद माराङ ठाकुर, जीव, दोनों पक्षी में जीवदान करने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने दोनों पक्षी को अंजुली में ले लिए और 'ओङ' (प्राणवायु) कर दिए। ओंङ (ॐ) करने के बाद दोनों पक्षी में प्राण आ गया और दोनों उड़ गए। इसको देखकर ठाकुरान गोगो (परमेश्वरी) बहुत खुश हुई और ठाकुर जीव से कहने लगे 'माकिन उड़ावेन' इसका अर्थ हुआ ये देखो उड़ गये! इसके बाद ठाकुरजीव और ठाकुरान गोगो में बात-चीत हो रहा है कि इन दोनों का नाम क्या रखा जाए? ठाकुराईन से कहता है आप ही नाम रख दीजिए, तो ठाकुरजीव कहते हैं मैं नहीं, तुम्हीं इन दोनों का नाम रखना है, क्योंकि तुम्हारा मैल से ही दोनों पक्षी का सृजन हुआ है। ठाकुराईन कहती है वो तो ठीक है लेकिन प्राण तो आप ही दिये हैं। इसलिए हम दोनों मिलकर ही दोनों का नाम रखेंगे। तब ठाकुरजीव, ठाकुराईन से पूछते हैं कि शरीर के किस भाग के मैल से दोनों को बनायी है। तब ठाकुराईन कहती है ये दोनों को (गले के नीचे और गर्दन के पास की हड्डी) के मैल से बनायी हूँ। तब ठाकुरजी कहते हैं कि तब तो इसका नाम हाँस और हाँसिल रखा जाए। दोनों के सहमति से दोनों का पक्षी का नाम 'हाँस हाँसिल' रखा गया। इसके बाद दोनों सेरमापूरी (स्वर्ग) चले गये। दोनों पक्षी उड़ते-उड़ते थक गये। इसके बाद दोनों पक्षी रोना विलाप करना शुरू कर दिए।

जो इस प्रकार है -

'सेरमा चोट मा ञांलात्-ञांलात् जलापुरी मा लेंगेत्-लेठोत्।
येहो-येहो ठाकुरजी, आलिश रियाक् टुड़प बानुक् तालिंञा।
तांहां रेता नाना तारना, ताहां रेता नाना हो।
सोरोगे तो देखालाङ, सोरोगे तो ऑधोकार,
पाताल तो देखालाङ, पाताल तो पानी, काहों तो बोयसाबो हो।
काहे ठाकुर जोनोम दिले,
काहे ठाकुर रूप दिले,

काहे ठाकुर जोनोम दिले,
काहे ठाकुर रूप दिले,

काहों तो बोयसाबो हो।" इस प्रकार दोनों पक्षी का रोना विलापना सुनकर ठाकुरजीव को दया आ गई। इसलिए उन्होंने लिटागोसाँय को बुलवाये और उनको कहा आप इन दोनों हाँस हासिल (हंस-हंसनी) पक्षी का पालन पोषण करें। तब लिटागोसाँय माराङ ठाकुरजीव से कहते हैं आपकी जैसी आज्ञा! मैं तैयार हूँ। तब लिटागोसाँय ने भूम पेड़ महादेव के रूप में समुद्र के बीच पत्थर के रूप में अपना 'सिर' लिंग जैसा प्रकट किए। इसके बाद से दोनों पक्षी बारी-बारी से उस पत्थर रूप महादेव जी के सिर पर बैठने लगे। एक जब उड़ते-उड़ते थक जाती थी, तब वह विश्राम करता, तो दूसरा उड़ता था। इन दोनों को ठहरने का स्थान मिलने के बाद बहुत राहत हुआ। इसके बाद दूसरी चीज की चिंता सताने लगी कि अब हम दोनों क्या खायेंगे। तब दोनों पक्षी फिर से रोना-विलापना शुरू कर दिये।

वो इस प्रकार है-

जोनोमे तो दिले ठाकुरजीव,
कोपाले तो नाय दिले,
ए बाबा, ठाकुरजीव,
ए बाबा, भोगोमान,
मानवा बाड़े को सिरजालेन खान,
मानवा बाड़े को बिरजाव लेन खान, तोवा तेको नुम मेया, दाहे तेको नाड़का मेया, बाहा रेको जुम मेया,
बाहा तुलाम तेको आभरान मेया,
बोछोर-बोछोर फागुन चाँदो को बापला मेया।"

इसके बाद महादेव जी दोनों पक्षी को ठीक प्रकार से शरण दिये। ठाकुरजीव और ठाकुराईन भी अपना कार्य को जारी रखे। समुद्र के जल में सेयालोम (शैवाल) पैदा हो गया। एक दिन ठाकुराईन स्नान कर रही

थी, तब उसके सिर का बाल थोड़ा सा टूट कर गिरा, तो वे शैवाल के ऊपर फेंक दीं। आगे चलकर उसी शैवाल और बाल से 'सिराम' नामक घास पैदा हो गया। उसी तरह से एक दिन ठाकुरजीव जलापुरी में स्नान कर रहे थे, तो उनका भी सिर का कुछ बाल गिर गया। तब वे उस बाल को उठाकर 'सिराम' नामक घास के ऊपर फेंक दिए। बाद में उसी से करम नामक पेड़ का जन्म हुआ। इसी तरह से बहुत दिन बीत गया और करम पेड़ भी धीरे-धीरे बढ़ने लगा। हंस पक्षी का जोड़ा समुद्र में इधर-उधर उड़ते फिरते थे, तब एक दिन उन दोनों को करम का पेड़ दिखाई दिया। आगे चलकर महादेव जी को छोड़कर उसी करम के पेड़ पर रहने लगे। जब दोनों पक्षी 'सिराम' घास और करम पेड़ में वास करने लगे, तब महादेव जी अपना सिर को जल के अंदर कर लिए। थोड़े समय के लिए महादेव जी को बहुत राहत महसूस हुआ। अब हंस-हंसनी बहुत प्यार से जीवन जी रहे थे। एक दिन उन दोनों के बीच में पति-पत्नी का संयम हो गया अर्थात् पति-पत्नी का प्यार हो गया। कुछ ही दिन के बाद हंसनी ने सिराम नामक घास में घोंसला बनाकर जोड़ा अंडा दे दिया। बाद में दोनों मिलकर उस अंडा को देख-रेख करने लगे। जब ठाकुरजीव को पता चला हांस-हांसिल ने दो अंडा दिया है, तो वे बहुत खुश हुए। इसी तरह से समय बीतते जा रहा था। एक दिन जब समय पूरा हुआ तो वे दोनों अंडा फूट गया और उससे दो मानव शिशु का जन्म हुआ। यह देखकर हंस और हंसनी को बड़ा भारी चिंता औरभय होने लगा। तब वे दोनों उड़ गए और माराङ ठाकुरजीव के पास जाकर विलाप करते हुए अपना दुखड़ा सुना रहे थे। वो इस प्रकार है-

"ताहांरिता नाना तारना,
ताहांरिता नाना नाना हो,

ताहारेता नाना तारना, ताहरिता नाना नाना हो। येहो येहो ठाकुर जी, येहो येहो चेतान रे, सिराम मा झुंड रे, काराम मा बुटा रे नालिञ गेलिञ तुका लेदा, नालिञ गेलिञ बेले लेदा, नालिञ गेलिञ ओबोर लेदा,

हाय-हाय सिराम जानामेन, हाय-हाय सिराम चेतान रे, हाय-हाय काराम जानामेन। दोसे, हाय-हाय माराङ ठाकुरजी, हाय-हाय नुकिन मानेवा, हाय-हाय तोका रेय दोहोकिन।"

"नालिञ रेयाक् रूप दो बाछा रे बाङ जेलोक् कान।"
"हाय-हाय सिराम जाला ताला रे,"

ठाकुरजीव दोनों पक्षी का रोना विलापना सुनकर स्वर्गलोक के सभी देवी-देवता को बुलाये और सभी बात बता दिए। उन्होंने सबको बताया कि हाँस हाँसिल (हंस-हंसनी) पक्षीजोड़ा अंडा से दो मानव शिशु का जन्म हुआ है। इसलिए हम सब मिलकर धरती का सृष्टि करेंगे। समुद्र में जल के ऊपर धरती खड़ा करना है। माराङ ठाकुरजीव की बात सुनकर सभी देवतागण गहन चिंतन मंथन करने लगे कि हम लोग धरती को कैसे खड़ा करेंगे? सभी कहने लगे कि धरती बनाने के लिए तो मिष्ट्टी का जरूरत है, मिट्टी को हमलोग कहां से लायेंगे? सभी देवतागण विचार करके कहने लगे कि इसका उपाय तो ठाकुरजीव ही बता सकते हैं, चलो उन्हीं को पूछेंगे। तब सभी देवतागण ठाकुरजीव को कहने लगे कि धरती बनाने के लिए तो मिट्टी चाहिए, लेकिन मिट्टी कहाँ है, हममें से कोई नहीं जानते हैं, आप ही इसका पता बता सकते हैं। तब ठाकुरजीव ने कहा, मिट्टी तो पतालपुरी में है। ठाकुरजीव का उत्तर सुनकर सब लोग कहने लगे वो तो बहुत दूर है, वहाँ से हमलोग मिट्टी को कैसे लायेंगे। तब ठाकुरजी ने देवतागण को उसका उपाय बताए कि सबलोग अपना अलग-अलग रूप धारण करो। ठाकुरजी की बात सुनकर सभी देवता अपना अलग-अलग रूप धारण किए। कुछ देवता मछली का रूप लिए, कोई केंकड़ा का रूप, कोई केंचुआ का रूप, कोई कछुवा और कोई देवता सांप का रूप धारण किए। इसके बाद बारी-बारी से सभी पाताल गए, लेकिन मिट्टी लाने में कोई भी सफल नहीं हुए। तब सभी देवताओं ने मिलकर केंचुआ का रूप धारण किये हुए देवता को भेजने का तय किया, लेकिन केंचुआ कहने लगा मेरा शत्रु तो रास्ते में बहुत है। मैं नहीं जा सकता।

हाँ, अगर पताल तक जाने के लिए मेरे लिए सुरक्षित रास्ता मिल जाए, तो मैं जा सकता हूँ और इसके साथ ही कछुवा का मदद चाहिए। तब इसके बाद विश्वकर्मा देवता को बुलाया गया और उनसे सब मिलकर कहने लगे, आप एक लंबा पाइप पताल तक जाने के लिए तैयार करें, जिससे केंचुआ बिना भय वहाँ तक जा सके। विश्वकर्मा भगवान ने सबकी विनती को स्वीकार किया और उन्होंने लंबा पाइप बनाया। इसके बाद केंचुआ पताल गया। वहां जाकर मिट्टी खाया और ऊपर आ गया। लेकिन अब दूसरा समस्या उपस्थित हो गया, मिट्टी कहां पर रखेंगे। यदि पानी में रखते हैं तो वह घुल जायेगा। इसके बाद कछुआ को बुलाया गया और उनको सब मिलकर कहे कि आप अपना पीठ पर मिट्टी धारण कीजिए। इसके बाद वे भी तैयार हो गए। अब केंचुआ पताल से मिट्टी लाकर कछुआ के पीठ पर मिट्टी रखने लगे। धीरे-धीरे कछुआ के पीठ पर बहुत मिट्टी जमा हो गया तो उसको भारी लगने लगा। कछुआ के पीठ पर अधिक भार होने से वह अपने पैर को हिलाने-डुलाने लगे। इसके बाद उसके पीठ से सारा मिट्टी जल में गिरकर घुल गया। इसको देखकर सभी देवतागण चिंतित होने लगे और सोचने लगे अब क्या होगा। तब उसी में से एक देवता तैयार हो गए, उन्होंने सांप का रूप धारण करके कछुआ का पैर को कस करके बांध दिया। अब कछुआ टस मस नहीं कर पा रहा था, स्थिर हो गया। इसको कोई-कोई इस तरह से भी बताते हैं कि ठाकुरान गोगो नीचे से कछुआ का पांव को पकड़ करके रखी थी। अब तीव्र गति से पताल से मिट्टी लाने का काम हो रहा था। जब कछुआ के पीठ पर बहुत ज्यादा मिट्टी जमा हो गया। इस तरह से धरती बनाने का काम अबाध रूप से चलता रहा। अब धीरे-धीरे धरती पूर्ण रूप से तैयार हो गया। लेकिन मिट्टी सुख नहीं रहा था, इसलिए स्वर्ग से ठाकुरजी ने सूर्य भगवान और चंद्र भगवान को बुलाये। अब वे दोनों स्वर्गपुरी और पतालपुरी से रोज दिन धरती में आने लगे। अब धरती का मिट्टी गीला से ठोस हो गया। इसके बाद धरती में सब चीज उगने लगा, ठाकुरजी ने उसका भी सारा व्यवस्था कर दिए। इसको देखकर सभी देवतागण एवं ठाकुरजी भी खुश हो रहे ये। जब धरती तैयार हो गया तब दोनों

मानव शिशु को वहाँ लाया गया। इन दोनों की देख-रेख और लालन-पालन के लिए ठाकुरजी ने माराङ बुरू (महादेव जी) को बुलाए ठाकुरजी ने माराङ बुरू से कहा इन दोनों का पालन पोषण करना है। माराङ बुरू ने ठाकुरजी के आदेश को सहर्ष स्वीकार कर लिया। ठाकुरजी ने सेरमापुरी (स्वर्गपुरी) से दो गाय को भेजा। उन दोनों का नाम आयनी गाय, बायनी गाय था। इन दोनों गाय को 'कामधेनु' गाय भी कहते हैं। अब माराङ बुरू (महादेवी जी) दोनों गाय के दूध से दोनों मानव शिशु का परवरिस कर रहे थे। वे रूई को दूध में डूबाकर दोनों शिशु के मुंह में देते थे। इस तरह से दोनों मानव शिशु धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे। कुछ दिन बाद माराङ ठाकुरजी ने एक बैल को भी भेजा, जिसका नाम रांगिया डांगरा था। इसको नंदी भी कहते हैं। माराङ बुरू (महादेवजी) उस बैल में चढ़कर इधर-उधर घूमते थे! माराङ बुरू का वही वाहन के रूपदेमें हैं। इसलिए आज भी कही पर भी महादेवजी का मंदिर है वहां पर रागिया डांगरा (नंदी) आवश्यक रूप से रहता है। माराङ बुरु उन दोनों मानव शिशु को बड़ी की प्यार/जतन से पालन पोषण कर रहे थे। जब वे दोनों रोते थे। तब वे बोलते थे, गीत गाते थे और नृत्य करते थे। वे उस समय इस प्रकार से गीत गाते थे - "नाना तारना, ताहां रेगा नाना तारना हो।" उसी को दूसरे प्रकार से गाते थे ताहांरिता नाना तारना, ताहांरिता नाना तारना हो, ताहांरेता नाना तारना, तांहां काहरेता ना तारना हो।" इसी गीत के साथ वे उछल-उछल कर नृत्य करते थे, ताली बजाते थे। इस तरह से दोनों मानाया शिशु का रोना बंद करते थे। माराङबुरू (महादेव जी) सभी प्रकार के गीत, नृत्य, वाद्य, खेलकुद, मनोरंजन जानते थे। मानव के जीवन में जो-जो आवश्यकता है वो सभी वे जानते थे और दोनों को वे आगे जाकर सिखाये। माराङबुरू ही उन दोनों के गुरु भी बने। इसी तरह से बहुत दिन बीत गया। अब दोनों मानव शिशु-शिशु से बाल और बाल से जवान हो गये थे। एक दिन माराङ बुरू जी ने लड़का को 'रानू' बनाने की जड़ी-बूटी लाने के लिए जंगल में ले गये। उस जड़ी को खोदते समय माराङ बुरू ने उस नौजवान लड़का को

धरती में लोटपोट करने के लिए कहता था। वह लड़का वैसा ही करता था। उस जड़ी के खोद कर लाने के बाद बारीकी से पीसवाये। माराङ बुरू ने नवयुवती से जेरा जानडे (कोदो), सुनतूबुत्य नामक घास, सामा नामक घास इत्यादि का बीज लाने को कहा। उसको सूखा करके 'ओखल' में कूटने के लिए कहा। कूट करके चावल जैसा बन गया और उसी में से थोड़ा आटा जैसा बनवाये। उस नौजवान को वह पीसा हुआ जड़ी को पानी में घोलने के लिए कहा और उसी पानी से पीसा हुआ आटा को मिलाने के लिए कहा, मिलाने के बाद छोटी-छोटी गोली बनाने के लिए बताया और उसको धूप में सुखवाये।

उस 'रानू' की जड़ी का पानी को माराङ बुरू ने चोडोर (भोग) करने के लिए कहा। सबसे पहले तीन दोना बनवाये और उसके बाद पहले माराङ बुरू (महादेव जी) के नाम से चोडोर (भोग) अर्पित के लिए बताया, इसके बाद दोसे पोंचे (पंचदेव) के नाम से भोग लगाने के लिए बताया। 'रानू' जब तैयार हो गया तब माराङ बुरू ने उस नवयुवती से घास के चावल का भात बनवाये और उस भात को सुखा करके 'रानू' नामक औषधी में मिलवाये। मिलाने के बाद एक घड़ा में उठाकर रखवाये, थोड़ा पानी मिलाकर उसको ढक कर रखवाये। घड़ा भी विश्वकर्मा भगवान ही बनाये थे। दो-चार दिन के बाद माराङ बुरू पूछते हैं उन दोनों से कि उस दिन हम रखवाये ये तो कैसा हुआ, युवती को देखने के लिए कहा। तब यह नवयुवती घड़ा का ढक्कन उठाकर बोलती है यह तो बहुत अलग प्रकार का सुगंध दे रहा है। तब माराङ बुरू ने नवयुवक को कहा थोड़ा सा लेकर आओ, हम उसको चखकर देखेंगे। जब वे चख करके देखे तो कहने लगे बहुत अच्छा है। कुछ देर के बाद उसमें थोड़ा पानी मिलाने के लिए कहा। थोड़ा सा सखुवा का पत्ता लाने को कहा। उस पत्ता से तीन दोना बनवाये और सिराम नामक घास का झाड़ू बनाकर उससे छांकने के लिए कहा। माराङ बुरू ने नवयुवक को कहा इसको बनाते समय जिस प्रकार से तुम चोड़ोर (भोग) किया था, उसी प्रकार से चोडोर (भोग) करो। माराङ बुरू उस नवयुवक को चोड़ोर (भोग) करने के लिए सिखाये।

उनको कहा पुरुष दिशा की ओर मुख करके बैठो और घुटना जमीन पर लगाओ और इस प्रकार बोलो "जोहार तोबे माराङ बुरू बापुठाकुरतीञ दो एमाम काय चालाम कान दो निया गे, कुसी ते कुसाल ते चैरच के माड़ाङ केयापे। जोहार तोबे खान दोसे-पोंचे आपे हो नियां गे, कुसी ते कुसाल ते आताङ पे दाराम पे, धरती दो बाड ते पेरेच्कोक् चोड़ाङकोक् मा। बाड आर वृक्ष दो साखीयाक् सभावाक् पे।

अर्थ :- "माराङ बुरू आपको प्रणाम, आप तो ठाकुरजी के भी ठाकुरजी हैं हमारे, आपको अर्पण कर रहे हैं खुशी-खुशी कृपया प्रेम से स्वीकार करें। प्रणाम आप सबों को भी जो दसों दिशाओं में रहते हैं और पंच परमेश्वर आप सबको भी खुशी-खुशी अर्पित कर रहा हूँ, यही चीज कृपया आनंद से खुशी-खुशी स्वीकार करें। यह धरती आबादी से, हरेक चीज से भरा-पूरा हो जाय, पेड़-पौधे, धन-धान्य, पशु-पक्षी इत्यादि से।"

मंत्र पूरा करने के बाद ड्रोबोक जोहार (प्रणाम-पाती) किये। भोग से बचा हुआ सोमरस को सबसे पहले माराङ बुरू पीये, इसके बाद दोनों (नवयुवक नवयुवती) पीये। इस प्रकार से माराङ बुरू थोड़ा कम पीये और दोनों लड़का-लड़की को पूरा पिलाये। दोनों को नशा' हो गया। दोनों को उस स्थिति में देखकर माराङ बुरू यहाँ से चले गये। बाद में दोनों को बड़ा आनंद आ रहा था और मनोरंजन करने लगे। कुछ देर के बाद दोनों सो गये और उसी समय पति-पत्नी का व्यवहार (संगम) हो गया। दूसरे दिन सुबह जब माराङ बुरू आये तो दोनों आवाज देने लगे, लेकिन अंदर से आवाज नहीं आ रहा था। बहुत देर के बाद दोनों जब उठे, तब आपस में एक दूसरे महसूस हो रहा था। बहुत देर के बाद नवयुवक ने अंदर से जवाब दिया, वह कहने लगा हम दोनों आपको देख रहे हैं, दोनों को 'शर्म' महसूस हो रहा था। बहुत देर के बाद नवयुवक ने अंदर से जवाब दिया, वह कहने लगा हम दोनों आपके सामने नहीं आ सकते हैं। माराङ बुरू समझ गये और कहने लगे कोई बात नहीं है। इसके बाद वे दोनों को माराङ बुरू ने

वस्त्र प्रदान किये और अंदर से बाहर दोनों उनके सामने निकले। माराङ बुरू से वे दोनों कहने लगे कि हम दोनों ने भूल किया है, तब वे कहने लगे नहीं, ये तो पति-पत्नी का व्यवहार हुआ है, बहुत अच्छा हो गया। उसी समय माराङ बुरू (महादेव जी) ने दोनों का सबसे पहले 'छाल्यिारी' किया। यह संस्कार पूरा करने के बाद उसी समय विवाह संस्कार भी पूरा किये। इसके बाद दोनों को कहने लगे अब शर्माने, लज्जाने की कोई बात नहीं है, आज से तुम दोनों पति-पत्नी हो। छाटियारी के समय ही 'नामकरण' संस्कार हो गया था। लड़का का नाम पिलचू हाड़ाम और लड़की का नाम पिलचू बुडही हो गया। आज भी संताल समाज में जन्म छाटियारी समय ही नामकरण होता है। उस समय नीम पत्ता डालकर मंडी (मांड़भात) बनता है। नीम जिस प्रकार तीता है वैसा ही नाम भी बहुत दिनों तक सबको याद रहेगा। यह संस्कार माराङ बुरू ने हिहिड़ी-पीपीड़ी नामक स्थान में किये थे। उसकी याद में आज भी संताली संस्कृति के संस्कारिक गीत गाँव-गाँव में गाते हैं। वो इस प्रकार है:-

"तोका रेढ़ो जानाम लेन नीम दो, हिपीड़-हिपीड़ नीम दो नीम दारे दो, तोका रेढ़ो बुसाड़ लेन दोङ दो, हिहिड़ी दोङ दो पीपीड़ी दोङ। हिहिड़ी-पीपीड़ी रे जानाम लेन नीम दो, हिपीड़-हिपीड़ नीम दो नीम दारे दो। हिहिड़ी रे जोनोम लेन दोङ दो, हिहिड़ी दोङ दो पीपीड़ी दोङ। पिलचू हाड़ाम पिलचू बूढ़ी, मानेवां बुसाड़ दो, हिहिड़ी नीम दो पीपीड़ी रे। तोकायाक् राचा रे दाक् बुम्बुकोक्, दाक् बुम्बुकोक् माना चावले बुहेलोक्, पिलचू हाड़ाम बाटे रे दाक् बुम्बुकोक्, दाक् बुम्बुकोक् माना दाहे बुहेलोक्।" **अर्थः** "नीम का जन्म कहाँ हुआ था, हिपीड़-हिपीड़ नीम नीम पेड़ का। कहाँ पर जन्म हुआ था दोड़ नामक गीत एवं नृत्य का। हिहिड़ी-पीपीड़ी में जन्म हुआ था दोड़ का। हिहिड़ी में जन्म हुआ था नीम पेड़ का, हिपीड़ी-हिपीड़ी नीम का पीपीड़ी में। इसके बाद दोनों आनंद से बिना भय रहने लगे। कुछ दिन के बाद पिलचू बूढ़ी गर्भवती हो गई। जब दिन समय पूरा हो गया तब लड़का हुआ। उस समय विषहरी माता उन दोनों को पिलचू हाड़ाम पिलचू बुढ़ी मानव

का जन्म कहाँ हुआ था, इन दोनों मानव का जन्म हिहिड़ी-पीपीड़ी में हुआ था।"

सहयोग किये, वही जच्चा-बच्चा का देख-रेख किये। वही एक प्रकार से दाय का काम किये। बाद में पिलचू हाड़ाम और पिलचू बुढ़ी के कुल मिलाकर सात लड़का और सात लड़की हो गये। इन सबका जन्म संस्कार माराङ बुरू के कहने के अनुसार ही संपन्न हुआ। सबका नामकरण इस प्रकार हुआ। सबसे बड़ा लड़का का नाम देवान, दूसरा का नाम सीनाय, तीसरा का मोंगला, चौया का बुढ़ान या बुधन, पांचवा का लखी, छठवां का सुक और सातवां लड़का का सालो रखा। इसकी उसी तरह से लड़कियों का भी नाम रखा गया। सबसे बड़ी का कारमी, दूसरी का सुमी, तीसरी का मुंगली, चौथी का बुधनी, पांचवी का सुखी, छठवाँ का साकरों और सबसे छोटी का नाम सालहो रखा गया। माराङ बुरू (महादेव जी) के कहने के अनुसार पिलचू हाड़ाम लड़को को अलग जगह से गए और पिलचू बूढ़ी लड़कियों को अलग जगह ले गई। इस तरह से बहुत समय बीत गया। लड़का-लड़की सब जवान हो गये थे। पहले से लड़कों को पिलचू हाड़ाम बता दिये थे कि सब तरफ जाओ, लेकिन इस दिशा में मत जाओ। वैसे ही पिलचू बूढी भी लड़कियों को बता करके रखी थी कि सब तरफ जाओ लेकिन इस दिशा में मत जाओ। एक दिन शिकार करते-करते जिस दिशा में नहीं जाना था उधर ही चले गये। तो वहाँ पर 'चापाकिया' नामक बरगद के नीचे लड़की लोग मिल गई। तब आपस में किसी को भी नहीं पहचान पा रहे थे। इसके बाद पूछताछ होने लगा कि तुम लोग कौन हो। लड़की लोग अपना परिचय 'रेयाड़ काण्डा किता कांडहूम' बताई और लड़का लोग अपना परिचय 'हेसेल पांयड़ा कोंचे कांड़बा' बताये। इसके बाद से वे लोग आपस में चुपके-चुपके मिलते जुलते रहे। आगे चलकर वे सब उम्र के अनुसार पति-पत्नी बन गये। बाद में वे सब उस स्थान को छोड़कर दूसरे जगह चले गये। पिलचू हाड़ाम और पिलचू बूढ़ी फिर एक साथ रहने लगे। वे दोनों सोचने लगे पता नहीं ये सब कहीं चले गये। कुछ दिन के बाद उन सबको खोजने के लिए चले गये। इस

प्रकार से मानव की संख्या बढ़ रही थी। आगे जाकर मानव की संख्या बहुत बढ़ गया और वे सब गाय-बैल जैसा व्यवहार कर रहे थे। तब ठाकुर जी को बहुत क्रोध आया, उन्होंने कहा कि इतना तपस्या करके सृष्टि का रचना किया गया और इन मानवों का सृजन किया गया, क्या ये दिन देखने के लिए?

उन्होंने सोचा कि सभी पापी मानव को जलाकर खत्म कर देंगे। इसके बाद अग्नि वर्षा पांच दिनों तक दिन-रात हुआ। फिर पता नहीं ठाकुरजी के मन में दया आ गई। उन्होंने अग्नि वर्षा को रोक दिया और सभी देवतागण को बुलाये और कहने लगे कि जाओ देखो कहीं पर मानव बचे हैं कि नहीं। वे सब ढूंढने के लिए निकले तो रास्ते में सब चीज जला हुआ दिखाई दे रहा था। चलते-चलते उन लोगों को एक बहुत बड़ा गुफा मिला, तो वहां पर आवाज लगाने लगे। इसके बाद अंदर से मानव का आवाज आया। तब सब लोग बहुत खुश हुए। धीरे-धीरे गुफा से पिलचू हाड़ाम और पिलचू बूढ़ी और उसके सभी संतान निकले। वे सभी लोग बच गये थे। संभवतः उस गुफा का नाम 'हाराता' या आरारत बुरू था। उस गुफा को छोड़कर अब वे लोग सासाङ बेडा (हल्दघाटी) चले गए। अग्नि वर्षा से जो सब मर गया था उसमें ठाकुरजी और देवतागण जल छिड़के तो सब जीव, पेड़-पौधो, पशु-पक्षी और अन्य सभी जीव इत्यादि जो बढ़े। सासाङ बेडा में पिलचू हाड़ाम ने अपने बेटों को 'छाटियार' किया यानी सभी को जाति, गोत्र दे दिया। उसके बाद सबको बताये कि अब से एक गोत्र में शादी नहीं करना। सबसे बड़ा बेटा को हाँस-हाँसिल यानी हंस के नाम से गोत्र दिया, इसलिए उसका नाम 'हांसदा' रखा। दूसरा बेटा का गोत्र ठाकुरजीव के नाम से रखा। इसलिए उसका नाम 'मुर्मू ठाकुर' हुआ। तीसरा का नाम माराङ बुरू के नाम से 'किस्कू रापाज', चौथा का गोत्र माराङ देवा भगवान) के नाम से 'मरांडी किपिसांड़' पांचवां का गोत्र सिञ चांदो (सूर्य भगवान) के नाम पर 'सोरेन सिपाही' छठा का पवन देव के नाम से 'हेम्ब्रम कुंवर', सातवां का नाम जिन्दो चांदो (चंद्रदेव) के नाम से टुडू रखा।

बाद में आगे चलकर पांच गोत्र और जुड़ गया। वो इस प्रकार है जैसे बास्की, बेसरा, चोंड़े, पावरिया और बेदिया। जब पिलचू हाड़ाम सबको गोत्र और पारिस दे रहे थे, तब भी माराङ बुरू (महादेव जी) मौजूद थे। ये सब होने के बाद माराङ बुरू कहते हैं, इन सबके लिए धर्म-कर्म, पूजा-पाठ भी चाहिए। वे कहने लगे गाँव के बीच में 'मांझीथान' और गाँव के बाहर पूरब दिशा में 'जाहेरथान' होना चाहिए। तब पिलचू हाड़ाम और पिलचू बूढी विचार करने लगे, हमलोग माराङ बुरू को ही मांझी रखेंगे। यह प्रस्ताव जब उनके पास उन दोनों ने रखा, तो वे कहने लगे नहीं मैं मांझी नहीं रहूँगा। मांझी तो तुम दोनों को रहना है, हाँ लेकिन मैं भी साथ में रहूँगा। तब समस्या हुआ किस जगह मांझीथान रखा जाय। इसके बाद माराङ बुरू ने तीर-धनुष निकाला और पहला तीर ऊपर चलाया, वह तीर जहाँ गिरा वहीं पर मांझीचान बना। दूसरा तीर जब वे छोड़े तो वह पूरब दिशा में गाँव के बाहर एक साल वृक्ष के पास जाकर गिरा। उसी जगह जाहेरथान बनाया गया। आदि मांझी और नायके के रूप में पिलचू ताड़ाम और पिलचू बूढी हुए। मांझीथान में पिलचूहाड़ाम-पिलचूबूढ़ी और माराङ बुरू का पूजा होने लगा। जाहेरथान में माराङ बुरू के कहने के अनुसार धरती को उठाने में जो-जो देवी-देवतओं का सहयोग मिला था विशेषकर ठाकुरान गोगो (ठाकुराईन) और अन्य देवी-देवता। जैसे जाहेरबान, गोसाँय एरा, मोंड़े को. तुरूयको, आदि देवी-देवता को स्थापित किया गया। जाहेरएरा और गोसाँयएरा के रूप में आदिशक्ति, मातृशक्ति को रखा गया और मोंड़े को (पंचदेव) के रूप बापु ठाकुर (ब्रह्मा), माराङ देवा (विष्णु), माराङ बुरू (महादेव), सूर्यदेव और चंद्रदेव को रखा गया। इनके अलावे षष्ठ देव को भी रखा गया। इस तरह से सब चीजों की रीति-नीति बनाया गया। पिलचू हाड़ाम और पिलचू बूढ़ी अपने संतानों को ये सभी बातें बताये। वे दोनों इस प्रकार से उन सबको बता रहे थे :- "नाङ लेका, जुग लेका माराङ ठाकुर माराङ बुरू लिटागोसांय दो आलोपे हिड़ीञेया।"

आगा रे, पूजा रे, बापला रे, बिहा रे, गुजूक रे, गुरोक् रे नियम

लेका पूजा पाठ दो आलो पे हिड़ीञा आर पे नोंका लेखान चोट रेन देवमुन को आर माराङ ठाकुर दो आपेये भोरापेमा। अर्थ :- "हर युग में नियम के अनुसार माराङ ठाकुर माराङ बुरू लिटागोसांय को कभी नहीं भूलना। पूजा-पाठ के समय, विवाह के जन्म-मरण के समय, पर्व-त्योहार के समय उनको पूजा-पाठ करना नहीं भूलना चाहिए और यदि इसी तरह से नियम के अनुसार सब कार्य करोगे तो सभी देवी-देवता और माराङ ठाकुर (परमेश्वर) आशीर्वाद देंगे।"

इस बात को युगों-युगों तक याद रखो। बाद में मोराङ ठाकुरजी और सभी देवी-देवता के आशीर्वाद और कृपा से मानव का आबादी दिन दुनी रात चौगुनी बढ़ने लगा। सासाङ बेडा (हल्दीघाटी) में बहुत दिनों तक रहने के बाद वे लोग खास पाल, भेलाऊँजा होते हुए आयरे दिसोम, (ईरान), कायण्डे दिसोम (कांदाहारा) पहुंचे। उसके बाद चावचान्या दिसीम (चायचाम्पा देश) में बहुत दिनों तक रहे। यह देश संभवत: सिंधु नदी के किनारे में था। यहां पर आकर विधिवत सभी देवी-देवताओं का पूजा-पाठ होने लगा। इसी देश में मांझीथान एवं जाहेरथान का स्थापना गांव-गांव में हुआ। यहां पर रहकर अनेक पर्व-त्योहार का भी आविष्कार किया गया। इसी देश में संताल के बीच कार्य विभाजन हुआ जैसे किस्कू लोग राजा हुए, मुर्मू लोग पुरोहित, सोरेन लोग सिपाही (सुरक्षा का काम), मरांडी लोग जमींदार, हेम्ब्रम लोग कुंवर (मंत्री), हांसदा लोग न्याय करने वाला, टुडू लोग मनोरंजन का कार्य (मांदड़िया), बास्की, बेसरा, चौड़े, पावरिया और बेदिया लोग वाणिज्ज-व्यवसाय के कार्य करने लगे। कहा जाता है क्षेत्र-क्षेत्र में परगना का व्यवस्था भी इसी देश में हुआ। यहां पर 'माधवा' नाम का किस्कू राजा हुआ करता था। सभी लोगों का अपना-अपना गढ़ (महल) हुआ करता था। जैसे मुर्मू का चाम्पागढ़, किस्कू का कोयडागढ़, मरांडी का बादोलीगढ़, सोरेन का चायबाहेरगढ़, हेम्ब्रम का खैरीगढ़, हाँसदा का मायनोमतीगढ़, टुडू का सिमगढ़ (हेसेल टुडाङगढ़), बास्की का हारियाड़ रेयाड़गढ़, बेसरा का बुनसारियागढ़, पांवरिया का बामागढ़, चोंड़े का ईचाक्रगढ़ और बेदिया का होलोङगढ़ (हारबा लोयोङगढ़) था।

किस्कू राजा के पास धारो हाँसदा नाम का एक युवक काम करने के लिए रहता था। राजा का हर कार्य में वह सहयोग करता था, विशेषकर पूजा-पाठ आदि में। किस्कू राजा का एक बहुत शक्तिशाली देवता था, उसका नाम 'जितया बोंगा' था। एक बार चाम्पा देश में एक हाथी पागल हो गया था। उस हाथी ने अनेक लोगों को जान से मार दिया था। राजा को जब यह खबर मिला तो वह बहुत चिंतित हुए, वे सोचने लगे इस हाथी को कैसे खत्म किया जाय। बाद में राजा ने पूरे राज्य में घोषणा कर दिया कि जो भी इस पागल हाथी को मारेगा उसको मैं आधा राज्य और अपनी बेटी को देंगे। इस कार्य के लिए कोई भी हिम्मत नहीं किया। लेकिन धारो हाँसदा ने 'जितया बोंगा' के सहयोग से उस पागल हाथी को मार गिराया। शर्त के अनुसार धारो हाँसदा को आधा राज्य और राजकुमारी मिल गई। इसके बाद उन्होंने जितया देवता (बोंगा) को मनाना शुरू किये और खुशी में उत्सव मनाया। उसने उस पर्व का नाम 'जितया छाता' रखा। तब से आज तक संताल समाज में जितया छाता पर्व होता है। चाम्पा देश में ही मरांडी लोगों ने 'बुरुबेरेत' पर्व और काराम पर्व शुरू किये। बाद में आगे चलकर पूरे संताल समाज में अनेक प्रकार के पर्व-त्योहार होने लगे जैसे- सोहराय पर्व, बाहा पर्व, एरोक् पर्व, पाता पर्व, हरियाङ् पर्व, दासोंय पर्व, जानयाड़ पर्व, सोहराय पर्व, साकरात पर्व और माग पर्व। चाय-चाम्पा देश में संताल लोग अपने को 'खेरवाड़' कहते थे। यहां पर सभी लोग आनंद और खुशी से अपना जीवनयापन करते थे। आगे जाकर चाम्पा देश में बहुत बड़ा संकट पैदा हो गया, विशेषकर उसके धर्म और संस्कृति पर। धर्म-संस्कृति की रक्षा करने हेतु ये लोग अपना राज-पाठ, धन-दौलत, सभी चीजों को छोड़कर अन्यत्र चले गये। घटना दस प्रकार है। किस्कू राजा का कोई संतान नहीं था। उनको एक अवैध लड़का का परवरिस हो रहा था। किस्कू राजा उसका नाम तो अपना नाम-माधोसिञ' दे दिया, लेकिन गोत्र तो नहीं दे पाये। क्योंकि वह लड़का किस गोत्र का है. यह तो नहीं मालूम। यदि वह अपना गोत्र देता है तो बड़ा अनर्थ या अधर्म हो जायेगा। जब माधोसिञ जवान

हो गया, तब कोई भी अपना बहन, बेटी को देने के लिए तैयार नहीं हुए। तब माधोसिञ ने कहा किस्कू मेरे लिए लड़की खोज करके दीजिए, नहीं तो मैं किसी का भी लड़की को सिंदुर डाल दूंगा। इसके बाद किस्कू राजा ने पूरे चाम्पा के लोगों को एकत्रित किए और यह समस्या बता दिए, लेकिन कोई भी अपना बहन-बेटी माधोसिञ को देने के लिए तैयार नहीं हुए। अंत में विचार हुआ हम लोग चाम्पा देश को छोड़कर अंयत्र चले जायेंगे, जहां पर हमारा धर्म-संस्कृति सुरक्षित रह सके। सभी संताल चाय-चाम्पा को छोड़कर चले गये।

"माधेसिञ विडराव ते बारो जोड़ सागाड़,
बानाव लेदा को साविक संताल,
मित्र दुवार बाहंदुवार मुहीव रेको पाड़ावेन,
होमोर केदा को हियाजाला,
कापी कारान भालवा विजय उलूम जुलूम पैकाहा,
गोड़ो लेना को धोरोम तेगे।"

अर्थ :- "माधोसिञ के चलते विस्थापित होकर बारह जोड़ा बैलगाड़ी, बनाये थे। असली संताल, सिञ दुवार (मित्र नामक दरवाजा) वाहदुवार (बांह नामक दरवाजा) रास्ता में बंद मिला, उस मुश्किल में पड़ गये। उसके बाद प्राण रक्षा के लिए आवाज (पुकार) लगाये। इन सब का संकट रूप की पुकार सुनकर कपि कारान (महावीर), भालवा विजय (जायवंत) आदि के सैनिक लड़ाकूओं ने मदद के लिए आया। ये सब धर्म के लिए मदद किये।"

इस तरह से रास्ते में अनेक प्रकार का संकट आया। कहीं पर नदी मिला। भरा-पूरा लबालब, कहीं पर गहरा खाई, कहीं पर घना जंगल। वे सब संकट को पार करते हुए एक मुसलमान के राज्य में आ गये। वहां पर आने के बाद अनेक प्रकार की विकृति इन सब के ऊपर गया। यह सब वहां के राजा के बहकावे में हुआ, नहीं तो उन सबको रहने नहीं दे रहा था। धर्म-संस्कृक्ति की रक्षा करने के लिए चाय-चाम्पा देश को छोड़ा लेकिन इन लोगों का अनेक चीज बदल गया। बाद में

माधोसित्र खोजते हुए आया, लेकिन वो इन लोगों को पहचान नहीं सके। इन लोगों का चाल-व्यवहार देखकर वह घृणा करने लगा और वापस चला गया।

बाद में संताल समाज के प्रमुख लोगों ने सोचा हम लोगों को धर्म-कर्म, रीति-नीति फिर से बनाना चाहिए। इसके बाद सभी संताल चितरीघुटू (चित्रकूट) के मैदान में आचार-विचार के लिए बैठे। यह बैठक कई दिनों तक चला और वहीं पर कुछ पुराना और कुछ नया मिलाकर सभी चीजों का नियम-कानून बनाया गया। उसके बाद सभी लोग मिलकर विचार किये कि ये सब नीति-नियम हम सब बनाये हैं ये ठीक है कि नहीं। इसका भी परीक्षण किया गया। 'तुड़ीघोर पुखूरी' और 'बाहाघोर बांदेलाय' नामक बांध में रूई को पानी में डुबाया और गोल पत्थर को तैराया। इसके बाद दूसरा परीक्षण हुआ यदि हमलोगों में धर्म और सत्य है तो खाली पांव बांध में पार हो जायेंगे। यदि हम लोगों का धर्म खत्म हो गया तो इस तालाब या बांध में पार नहीं हो सकेंगे। अंत में सब लोग उसमें पार हो गये, कोई भी पानी में डूबे नहीं और पांव भी गीला नहीं हुआ। तब सबको विश्वास हो गया कि हम लोगों का धर्म अच्छा हुआ है। हमलोग जो नीति-नियम बनाये, वो सब भी ठीक है। इसके बाद सभी संताल उसी नियम का पालन करते हुए अपना जीवनयापन करने लगे। इस तरह से संतालों का आबादी बहुत अधिक बढ़ गया। बाद में वे सब चारों तरफ फैल गये।

चायचाम्पा देश में सभी प्रकार का पूजा-पाठ सात्विक तरीका से होता था। लेकिन जैसे ही ये लोग तुर्क दिसोम, भांड़ दिसोम में आये तो बलि प्रथा शुरू हो गया और विभिन्न प्रकार के बोंगा (देवता) का पूजा होने लगा (आज भी संताल समाज में अनेक बोंगा बुरू (देवी-देवताओं) का पूजा पाठ होता है।

संताली संस्कृति के देवी-देवता मुख्य रूप से इस प्रकार है:-

1. माराङ ठाकुरजीव

2. ठाकुरान गोगो
3. सिञ चाँदो
4. जिन्दा चाँदो
5. माराङ बुरू
6. माराङ देवा
7. मोंड़ेको
8. तुरूई को
9. जाहेरएरा
10. गोसाँयएरा
11. मांझी बाबा
12. मांझी गोगो
13. परगना बाबा आदि।

ये सभी देवी-देवता गाँव में सामूहिक रूप से नायके के द्वारा पूजन किया जाता है। इसके अलावे घर-घर में अलग-अलग देवी-देवता हैं जैसे ओड़ाक् बोंगा (गृह देवता), आबगे बोंगा (आबगे देवता), सीमा बोंगा (सीमा देवता), जुम-आम बोंगा (इच्छानुसार विशेष देवता पूजना), हापड़ाम बोंगा (पितर देवता) आदि।

संताली संस्कृति में निम्न प्रकार का पूजा स्थान जैसे 1. मांझीथान, 2. जाहेरथान, 3. परगनाथान, 4. गोडथान, 5. आबर्गेथान, 6. सीमाडण्डीथान और 7. सहाथान। **संताल समाज में बारह प्रकार के गुरु होते हैं** जैसे 1. जानगुरु 2. कामरूगुरु 3. हनुमान गुरु 4. बुवाङ गुरु 5. धुबी गुरु 6. केंवटा गुरु 7. रोहड़ा गुरु 8. कुल गुरु 9. साध् 4 गुरु 10. गाण्डो गुरु 11. बिरहोड़ गुरु 12. धीमा गुरु आदि।

ये गुरु बाबा लोग भी अनेक प्रकार के देवी-देवता को मानते एवं पूजते हैं। एक प्रकार से कहा जा सकता है कि संताली संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में ये लोग शिव, पार्वती, दुर्गा, काली, मानसादेवी

आदि विभिन्न देवी-देवता को मानते हैं। संताली संस्कृति के अनेक पर्व-त्योहार हैं जैसे बाहापर्व, एरोक् पर्व, हरियाड़ पर्व, जानथाड़ पर्व, सोहराय पर्व, मागपर्व, साकरात पर्व, जातरा पर्व, जोमसीम पर्व, पाता पर्व, छाता पर्व, दासांय पर्व और काराम पर्व आदि। इन पर्वों के अवसर पर देवी-देवताओं का विशेष रूप से विधि-विधान के साथ पूजन किया जाता है। संताली संस्कृति में एक भी ऐसा पर्व नहीं है जो बिना गीत एवं नृत्य के होते हो। सभी पर्वो के अवसर पर संबंधित पर्व के नाम संगीत एवं नृत्य होते हैं। उसके साथ बाजा भी उसी के अनुसार बजते हैं। जैसे बाहापर्व के अवसर पर बाहागीत-नृत्य, सोहराय पर्व के अवसर पर गीत एवं नृत्य, दासांय के समय दासांय नृत्य एवं गीत. पाता के अवसर पर पाता गीत एवं नृत्य, आदि। काराम पर्व में काराम गीत एवं नृत्य, शादी-विवाह के अवसर पर दोङ नामक गीत एवं नृत्य होते हैं। वैसे भी गीत एवं नृत्य हैं जो बारह महीना गाया जाता है जैसे लांगड़े गीत एवं नृत्य है। इसके अलावे भी अनेक गीत एवं नृत्य है। इन पर्वो एवं अन्य अवसरों पर बजाये जाने वाले वाद्य यंत्र निम्न प्रकार है। जैसे - तुम्दाक् (मांदर), टामाक (नगाड़ा), कोरताल (झाल), ढोल, ढाक, तिरयो (बांसुरी), मुरली, सिंगा, साकवा, मांदान भेड़, बानाम इत्यादि।

बाहा पर्व के अवसर पर नायके के जाहेरथान में इस प्रकार से पूजन किया जाता है। सबसे पहले उस स्थान को गोबर से पवित्र किया जाता है जहाँ पर 'वेदी' बनने वाला है। जिसको संताली में 'खोंड' कहते हैं। उसके बाद अरवा चावल, पुष्प, महुआ, दूध, जल से जाहेरएरा एवं अन्य देवी-देवताओं का मंत्र के साथ पूजन किया जाता है। उसके साथ ही मुर्गी का छोटा बच्चा (चेंगना) का बलि होता है। उस समय इस प्रकार मंत्र बोलते हैं - "जोहार तोबे जाहेरएरा बापु ठाकुरतीजव दो, बाहा ञुतुम ते एमामकान, चालामकान, नियांगे कुसीते, कुशालतेम आताङाम, तेलायमें, नियां गेम सुकोक् रेबेनकोक्जाम, आले दो छोड कोड़ा, छोंडकुड़ी, बाले बाड्ाला ओरोमा, गेगेच् रे गुगरीय् रे नेवरे नीचारे ओका कोरे दोगेकआ दीगाजोआ, आले दो बाले

बाङ्या ओरोम साहावके लाहावकेया, सेदाय मारे हापड़ाम कैदो चेत् लेका तेचोङ लुमङ लुगड़ी सिंदुर साड़ी ते आताङ लेतु तेला लेत् पेया को। बापुठाकुरतीञ दो, डी रे, डाण्डी रे लाच् हासो, बोहोक् हासो, आलो पे बोलो ओचो सोड़ो ओचोया, पेड़ा को गुतिया को, नांय पारोम गाडा पारोम नेवता आकात् कोले बारते आकात् कोले, देव को भागिन को, नाती को, नाटकाड़ को, एनेच् जोङ सुलाङ जोङको, जनटी आलो, पधरी आलों, नास आलो, विनास आलो, नेयाव आलो, झोगोड़ आलो, रासका काते एनेच् जोङ, सुलाङ जोङ माको। गोसाँय बापुठाकुरतीञ दो।"

इसका अर्थ इस प्रकार है "जाहेर माता हम सबों का निवेदन प्रणाम स्वीकार कीजिए। बाहा पर्व के नाम से आपको अर्पित कर रहे हैं जो कुछ भी बन पड़ा, खुशी से, आनंद से स्वीकार करें। हम सभी आधा-अधुरा हैं, अल्पबुद्धि वाले हैं, जानते और पहचानते भी नहीं है, नीति-नियम में भी कमी रह गया होगा, वो सब भी नहीं मालूम, वो भी आप सहन कर लें। हमारे पूर्वज लोग बहुत अच्छे थे, जानकर थे और अच्छे-अच्छे कीमती वस्त्र धारण करके सबों का पूजन एवं वंदन किए होंगे। लेकिन हम लोगों के पास तो वो भी नहीं है, फिर भी आप से विनती है, निवेदन है गांव में, गांव के सीमा में, किसी को भी पेट दर्द, सिर दर्द न हो, हमलोगों के अतिथि, भाया-गुतिया, नदी पर से निमंत्रण देकर बुलाये गये हैं। भगना-भगिनी, नाती-पोता वगैरह खेलेंगे, नाचेंगे। उसके बीच में किसी प्रकार देश में सघन-रूप से घुमने में क्या-क्या मिलेगा शिष्य -

शिष्य क्या-क्या मिलेगा ?
देश भ्रमण में गुरु जी तेल और सिंदुर मिलेगा,
गुरु जी तेल-सिंदुर मिलेगा।
देश भ्रमण में शिष्य काजल मिलेगा,
शिष्य काजाल मिलेगा
आयनोम काजार (काजल) को क्या करोगे शिष्य?

शिष्य लोग क्या करोगे?

तेल-सिंदुर को गुरु जी हमलोग सेवा-पूजा करेंगे,

गुरु जी हमलोग सेवा-पूजा करेंगे। काजल को हमलोग देवता को चढ़ायेंगे, हमलोग देवता को चढ़ायेंगे।"

2. "कहाँ पर गुरु जी 'जाहेरथान' की उत्पत्ति हुई है?

गुरु जी जाहेरथान की उत्पत्ति हुई?

कहाँ पर गुरु जी देवता (बोंगा) का अवतार हुआ था?

गुरु जी देवता का अवतार हुआ था?

युरूनी नामक वन में शिष्य जाहेरथान की उत्पत्ति हुई, शिष्य जाहेरथान की उत्पत्ति हुई। सखुआ (सालवृक्ष) के नीचे शिष्य देवता (बोंगा) का अवतार हुआ था, शिष्य लोग देवता का अवतार हुआ था।

उस जाहेरथान का कौन सेवा-पूजा करेगा?

गुरु जी कौन सेवा-पूजा करेगा?

उस देवता का गुरु जी कौन पूजा-सेवा करेगा?

गुरु जी कौन पूजा-सेवा करेगा?

उस जाहेरथान में शिष्य नायके सेवा करेगा।

शिष्य नायके सेवा करेगा।

उस देवता का शिष्य नायके पूजा करेगा, शिष्य नायके पूजा करेगा।"

3. "कहाँ पर गुरु जी ढोल का आवाज हो रहा है?

गुरु जी ढोल का आवाज हो रहा है।

कहाँ पर गुरु जी ढाक, झांझ का आवाज हो रहा है। छातापर्व के मैदान में ढोल का आवाज हो रहा है.

शिष्य ढोल का आवाज हो रहा है।

देवी (दुर्गा) के द्वार में शिष्य 'ठाक' का आवाज ही रहा है। शिष्य 'झांझ' का आवाज रहा है।"

संतालों का सृष्टि कथा से पता चलता है कि प्रारंभ से ही महादेव जी विभिन्न रूपों में मिलते हैं। कभी लिटागोसाँय के रूप में, कभी माराङ बुरू के रूप में और भूमपेड़ महादेव जी के रूप में रहते हैं। वास्तव में महादेव जी संताल समाज में परमेश्वर एवं आदि गुरु के रूप में पाये जाते हैं। इसलिए आज भी इनके बीच माराङ बुरू के रूप में हर समय याद करते हैं जैसे जन्म में, विवाह में, मरण में, पर्व-त्योंहारों में, दु:ख में, सुख में, विभिन्न पूजा-पाठ के समय, घर में, बाहर में, मांझीथान में एवं जाहेरथान में। एक प्रकार से हम कह सकते हैं कि माराङ बुरू महादेव जी के बिना कुछ भी नहीं है। भारत वर्ष का सनातन परंपरा है-

पेड़-पौधे, पहाड़, पत्थर, नदी, जल, आग, वायु, पशु-पक्षी, सूर्य-चंद्र को देवता मानकर पूजना और कोई भी पूजा पूरब दिशा मुखकर करना। इसके अलावे अतिथि को देवता तुल्य मानना, जन्म से लेकर मरण तक अनेक संस्कार मानना, देवी-देवता को मानना, विभिन्न प्रकार के पूजा स्थान पर रखना, किसी को भी कष्ट नहीं पहुँचाना, सभी लोगों का कल्याण हो, दूसरे का अधिकार को नहीं छीनना, बड़ों का आदर करना, पर्व-त्योहार मनाना, दूसरे का दु:ख देखकर दु:खी होना और दूसरे का खुशी देख कर खुश होना, सुख देखकर सुखी होना, पुनर्जन्म एवं गोत्र परंपरा को मानना, सगोत्र में विवाह नहीं करना, आत्मा-परमात्मा को मानना, जीओ और जीने दो का भाव रखना आदि।

प्रकार से हम कह सकते हैं जिस-जिस से मानव का एवं विश्व का कल्याण होता हो, उनको भगवान के समान मानना एवं देवता के रूप में पूजन वंदन करना।

ये सभी परंपराऐं संताल समाज में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, मौजुद है, इससे थोड़ा भी कहीं भिन्न नहीं है। इसलिए संतालों की परंपरा, संस्कृति सनातन है। आज उसी सनातन को ही हिन्दू कहते हैं। यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है, बल्कि जग जाहिर है।

सहायक ग्रंथ एवं संदर्भ संकेत :-

1. मोड़ेबुरू आगिल हापड़ाम कोवाक् मानवाँ श्रीजान कथा, लेखक- महादेव मरांडी, पृष्ठ सं. 27
2. आर चाचो छाटियार, लेखक-स्टेफन हिकिम मुर्मू 1945 ई. पू. सं. 32
3. काराम सामाङ रे, लेखक डी. बड़का किस्कू, पृ. सं.
4. काराम ठाकुर सामाङ रे, लेखक डी. बड़का किस्कू, पृ. सं. 107
5. काराम ठाकुर सामाङ रे, लेखक डी. बड़का किस्कू, पृ. सं. 106
6. काराम ठाकुर सामाङ रे, लेखक डी. बड़का किस्कू, पृ. सं. 113
7. मोंड़ेबुरू आगिल हापड़ाम कोवाक् मानवाँ श्रीजान कथा लेखक - महादेव मरांडी, पृ. सं.
8. मोंड़ेबुरू आगिल हापड़ाम कोवाकू मानवी बीजान कथा लेखक महादेव मरांडी. पू. सं. 44
9. मोड़ेबुरू जागिल हापड़ाम कोवाक् मानवों श्रीजान कया लेखक महादेव मरांडी, पू. सं. 44
10. काराम ठाकुर सामाङ रे, लेखक डी. बड़का किस्कू, पू. सं.
11. आकिल बाती (सेरेअपुची) लेखक महादेव मरांडी
12. होड़कोरेन मारे हापड़ाम कोरेयाक् कथा, लेखक फादर स्कैपरूड मिशन प्रेस बेनागढ़िया, दुमका 1887 ई. पू. सं. 187
13. होड़कोरेन मारे हापड़ाम कोरेयाक् कथा, लेखक फादर स्कैपरूड मिशन प्रेस बेनागढ़िया, दुमका 1887 ई. पू. सं. 188 189

14. होड़कोरेन मारे हापड़ाम कोरेयाक् कथा, लेखक फादर स्कैपरूड मिशन प्रेस बेनागढ़िया, दुमका 1887 ई. पू. सं. 191

15. कायनी आर गायनी (पासपोर्ट) प्रो. एस. सी. हाँसदा, पृ. सं. 41-42

16. काचनी आर गायनी (पासपोर्ट) प्रो. एस. सी. हॉसदा, पृ. सं. 40